समास

समासः– दो या दो से अधिक शब्दो के मेल से हाने वाले परिवर्तन को समास कहते है।

समासः– सम + आस (दो शब्द पास–पास आकर बैठते है और परिवर्तन होता है)
(आस पास) (बैठना)

समास का शाब्दिक अर्थः– संक्षेप करना

समास के प्रकारः–

1. **अव्ययी भाव समासः–**

– पहला पद प्रधान होता है।

– पहला पद अव्यय/उपसर्ग होता है।

– सदैव नपुंसक लिंग में एक बचन में प्रयुक्त।

– जिस शब्द में अव्यय जुडता है, वह समस्त पद अव्यय बन जाता है।

– पुनरावृत्ति वाले शब्दों में अव्ययीभाव समास होगा।

जैसेः–	समस्त पद	समास विग्रह
1.	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
2.	निर्मक्षिका	मख्यिों का अभाव
3.	यथा योग्य	योग्यता के अनुसार

अव्यय शब्दः– पर, अधि, निर, निस्, दुर, अ, आ, यथा, प्रति, बे, वा, व

2. **तत्पुरूष समासः–**

ऐसा समास जिसका विग्रह करने पर कारक चिह्नों विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

–इसका द्वितीय पद प्रधन होता है।

यह छः प्रकार के होते हैः–

– कर्म/द्वितीय तत्पुरूष (को)

–करण / तृतीय तत्पुरूष (से)

– सम्प्रदान / चतुर्थी तत्पुरूष (के लिए)

– अपादान / पंचमी तत्पुरूष (से अलग होना)

– संबंध / षष्ठी तत्पुरूष (का, की, के)

–अधिकरण / सप्तमी तत्पुरूष (में, पे, पर)

जैसेः– विद्यालय – विद्या का आलय

रसोई घर– रसोई के लिए घर

रोमुक्त – रोग से मुक्त

हस्तलिखित –हात्थ से लिखा हुआ

राष्ट्रपति – राष्ट्र का पति

3. द्विगु समासः–

इसका पहला पद संख्यावाची लेकिन दूसरा पद प्रधान होता है लेकिन इसका विग्रह करते समय अंत में समाहार (समूह) पद जोड़ते है।

समस्त पद	**समास विग्रह**
– पंचवटी	पॉच वाटिकाओं का समूह
– सप्तर्षि	सात ऋषियों का समूह
– अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार

4. **कर्मधारय समासः–**

जिस समास के पूर्व पद और उत्तर पद में 'विशेषण–विशेष्य' अथवा 'उपमान–उपमेय' का संबध होता है और दसवां पद प्रधान होता है उसे कर्मधारय समास कहते है।

शब्द	विशेषण	विशेष्य	विग्रह
नीलगगन	नील	गगन	नीला है जो गगन
महादेव	महा	देव	महान है जो देव
महात्मा	महान	आत्मा	महान है जो आत्मा
पीतांबर	पीला	अम्बर	पीला है जो अम्बर
कालीमिर्च	काली	मिर्च	काली है जो मिर्च

शब्द	टपमान	उपमेय	विग्रह
चरण कमल	क्मल	चरण	कमल के समान चरण
घनश्याम	घन	श्याम	घन के समान श्याम
चंद्रमुख	चंद्र	मुख	च्द्रमा के समान मुख
नरसिंह	सिंह	नर	सिंह के समान नर
विद्याधन	धन	विद्या	धन के समान विद्या

5. **बहुब्रीहि समासः–**

   जिस समास में न तो पूर्व पद प्रधान होता है और न ही उत्तर पद प्रधान होता है, किसी अन्य पद की प्रधानता होती है, उसे बहुब्रीहि समास कहते है।

जैसेः–

लंबोदर – लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश

त्रिनेत्र – तीन है नेत्र जिसके अर्थात शिव

गिरिधर – गिरि को धारण करने वाला अर्थात प्रथ्वी

रत्नगर्भा – रत्न है गर्भ में जिसके अर्थात प्रथ्वी

दशानन – दस है आनन जिसके अर्थात रावण

परशुराम – परशु धारण करने वाला अर्थात परशुराम

अंशुमाली – अंशु है माला जिसकी अर्थात सूर्य

मुरलीधर – मुरली को धारण करने वाला अर्थात कृष्ण

चतुर्भुज – चार है भुजाएँ जिसकी अर्थात विष्णु

नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव

6. द्वंदव समासः–

जिन समस्त पदों के पूर्व और उत्तर दोनों ही पद प्रधान होते है उन्हें द्वंदव समास कहते है मध्य में स्थित और तथा या आदि लुप्त हो जाते है।

जैसेः– पिता–पुत्री – पिता और पुत्री

राधा–कृष्ण – राधा और कृष्ण

सीता–राम – सीता और राम

धनी–निर्धन – धनी और निर्धन

राजा–रंक – राजा और रंक

वाक्य– विचार

1. **वाक्य किसे कहते है?**

उत्तरः– दो या दो से अधिक शब्दों का एक ऐसा समूह जो कि व्यवस्थित और निशिचित हो वाक्य कहलाता है।

2. **वाक्य के कितने अंग होते है?**

उत्तरः– 1. उद्देश्य – कर्ता (कर्ता का विस्तार एक भी)

2. विधेय – कर्ता के अलावा बचा हुआ सम्पूर्ण वाक्य

जैसेः– शालिनी ↓ उद्देश्य गाना गाती है। ↓ विधेय

3. वाक्यों का वर्गीकरणः–

   - क्रिया के आधार पर वाकय/वाच्य का वर्गीकरणः–

- कर्तृवाच्य – कर्ता प्रधान (कर्म हो भी सकता है और नही भी हो सकता)
  जैसेः– राम ने रावण को मारा।
- कर्मवाच्य – कर्मप्रधान (के द्वारा + कर्म)
  जैसे – राम के द्वारा रावण को बाण से मारा गया।
- भाववाच्य – भाव प्रधान होता है।

   - रचना के आधार पर वाक्य का वर्गीकरणः–

- साधारण वाक्यः– जिन वाक्यों में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, सरल वाक्य कहलाते है।
  जैसे– राम, शत्रुध्न, भरत, लक्ष्मण, चार भाई थे।

- मिश्रित वाक्यः– जब एक प्रधान वाक्य के साथ कोई उपवाक्य जुडा हो तो ऐसे वाक्यों को मिश्रित वाक्य कहते है। एक वाक्य दूसरे वाक्य पर निर्भर रहता है। क्योंकि यदि, अगर, तो, तथापि, यद्यपि, इसलिए, जब–तब, ज्यों–त्यों, आदि।
  जैसे– अगर तुम मेहनत करोंगे, तो सफलता पाओगे।
- संयुक्त वाक्यः– जब दो प्रधान वाक्य किसी शब्द द्वारा जोड दिए जाते है। तो उसे संयुक्त वाक्य कहते है। या, और, किंतु, परंतु, अथवा, इसलिए आदि
- जो वाक्य के द्वारा जोडे हो वो संज्ञा उपवाक्य कहलाते है।